इस्लाम की दो बुनयादी शिक्षाए

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*मुस्लीम, रावी हज़रत जरीर इबने अब्दुल्लाह रदी.
हम रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में सुब्ह के वकत बैठे हुवे थे कि इतने में कुछ लोग आए तलवारे बांधे हुवे, मोटे कम्बल लपेटे हुवे, उन्के बदन का ज़्यादातर हिस्सा नंगा था और उनमे से ज़्यादातर लोग मुज़र के कबीले से थे, बल्कि सभी मुज़री थे. उन्की गुरबत और फकीरी को देख कर आपﷺ का चेहरा परेशानी की वजह से पीला पड गया, फिर आप घर में गए और बाहर आए, हज़रत बिलाल रदी को हुक्म दिया कि वो अज़ान दे (नमाज़ का वकत हो चुक था) तो हज़रत बिलाल रदी ने अज़ान और फिर तकबीर कही, आपﷺ ने नमाज़ पढाई, और नमाज़ के बाद तकरीर फरमाई जिसमे आपने सूरह निसा

की पहली आयत और सूरह हशर के आखिरी रूकू की पहली आयत तिलावत की और उस्के बाद फरमाया, लोगो को चाहिए कि अल्लाह की राह में सदका (दान) दे, दीनार दे, दिरहम दे, कपडे दे, गेहूं का एक साअ दे, खजूर का एक साअ दे, यहा तक्की आपने फरमाया अगर किसीके पास खजूर का आधा टुकडा हो तो वो वोही दे.

तकरीर सुनने के बाद अंसार का एक आदमी अपने हाथ में एक थैली लिए हुवे आया जो हाथ में समाती नही थी फिर लोगो ने एक के बाद एक सदका (दान) देना शुरू किया, यहा तक कि मेने गल्ला और कपडे के दो ढेर देखे. लोगो के इस तरह सदका देने से आपﷺ का चेहरा दमक उठा जैसे कि सोने का पानी चढा दिया गया हे, फिर आपﷺ ने फरमाया जो शख्स इस्लाम में कोई अच्छा तरीका शुरू करे उस्को उस्का बदला मिलेगा और जो लाग इस अच्छे तरीके पर बाद में अमल करेंगे उन्का भी अज्र उस्को मिलेगा और ये कि काम करने वालो के बदले में से कोई कमी नही की जाएगी और जिसने इस्लाम में किसी बुरे तरीके को राइज किया तो उसे उस्का गुनाह होगा और बाद में जो लोग उस बुरे तरीके पर चलेंगे तो उस्का गुनाह

भी उस्के नाम-ए-आमाल में लिखा जायेगा. बगैर इसके कि उन अमल करने वालो के गुनाह में कोई कमी हो.

इस्लाम की दो बुनयादी शिक्षाए हे, पहला तौहीद, दूसरा अल्लाह के मोहताज व गरीब बन्दो पर रहमत व शफकत करना, यही वजह हे कि आपﷺ का चेहरा परेशानी की वजह से पीला पड गया, और जब उन्के लिए कपडो और खानो का कुछ इन्तेज़ाम हो गया तो आप का मुबारक चेहरा सोने की तरह दमकने लगा.

आपﷺ ने अपनी तकरीर में सूरह निसा की पहली आयत पढी, जिस्का तरजुमा ये हे- ऐ लोगो! अपने पालने वाले के गुस्से से बचने की फिक्र करो जिसने तुमको एक जान यानी एक बाप से पैदा किया, और उससे उस्का जोडा बनाया और उन दोनो से दुनिया में बहुत से मर्द व औरत फैला दिए तो अपने पालने वाले खालिक यानी अल्लाह की नाफरमानी से बचने की फिक्र करो जिस्का नाम लेकर तुम एक दूसरे से अपना हक मांगते हो, और रिश्तेदारी का लिहाज करो और उन्के हुकूक को पूरा करो, हकीकत में अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा हे.

इस आयत में अल्लाह तआला ने दो बाते फरमाई हे. एक वहदत ए इलाह, और दूसरा वहदत ए बनी आदम, वहदत ए इलाह का मतलब ये हे कि सिर्फ अल्लाह इबादत व अताअत का हकदार हे इसका नाम तौहीद हे. और वहदत ए बनी आदम का मतलब ये हे कि सारे इन्सान एक मां बाप की औलाद हे, इसलिए उन्के बीच रहमत व शफकत की बुनियाद पर मामला होना चाहिए. उन गरीबो को देखकर सदका के लिए अपील करते हुवे आपﷺ का इस आयत को पढना साफतौर पर इस बात की तरफ इशारा करता हे कि सोसाईटी के गरीबो की मदद ना करना अल्लाह की नाराजगी और गुस्सा का सब्ब बनता हे.

और सूरह हशर की जो आयत आपﷺ ने पढी उस्का तरजुमा ये हे- ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह के गुस्सा से डरो, और हर आदमी को इस बात पर नज़र रखना चाहिए कि वो कल (कयामत) के लिए क्या ज़खीरा जमा कर रहा हे. ऐ लोगो! अल्लाह के गुस्सा से डरो अल्लाह जानता हे तुम्हारे उन कामो को जो तुम करते हो. ये आयत पढकर आपﷺ ने इस बात की तरफ इशारा फरमाया कि गरीबो पर जो माल

खर्च किया जाता हे वो आदमी के लिए आखिरत में ज़खीरा बनता हे, वो बरबाद नही होता. जिस आदमी ने सबसे पहले सदका किया था उस्की आपﷺ ने तारीफ फरमाई और बताया कि उस्को अपने सदके का भी सवाब मिलेगा, और इस बात पर भी उस्को बदला मिलेगा कि उस्को देख कर और लोगो में भी सदका करने का जज़्बा पैदा हुवा.